# कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

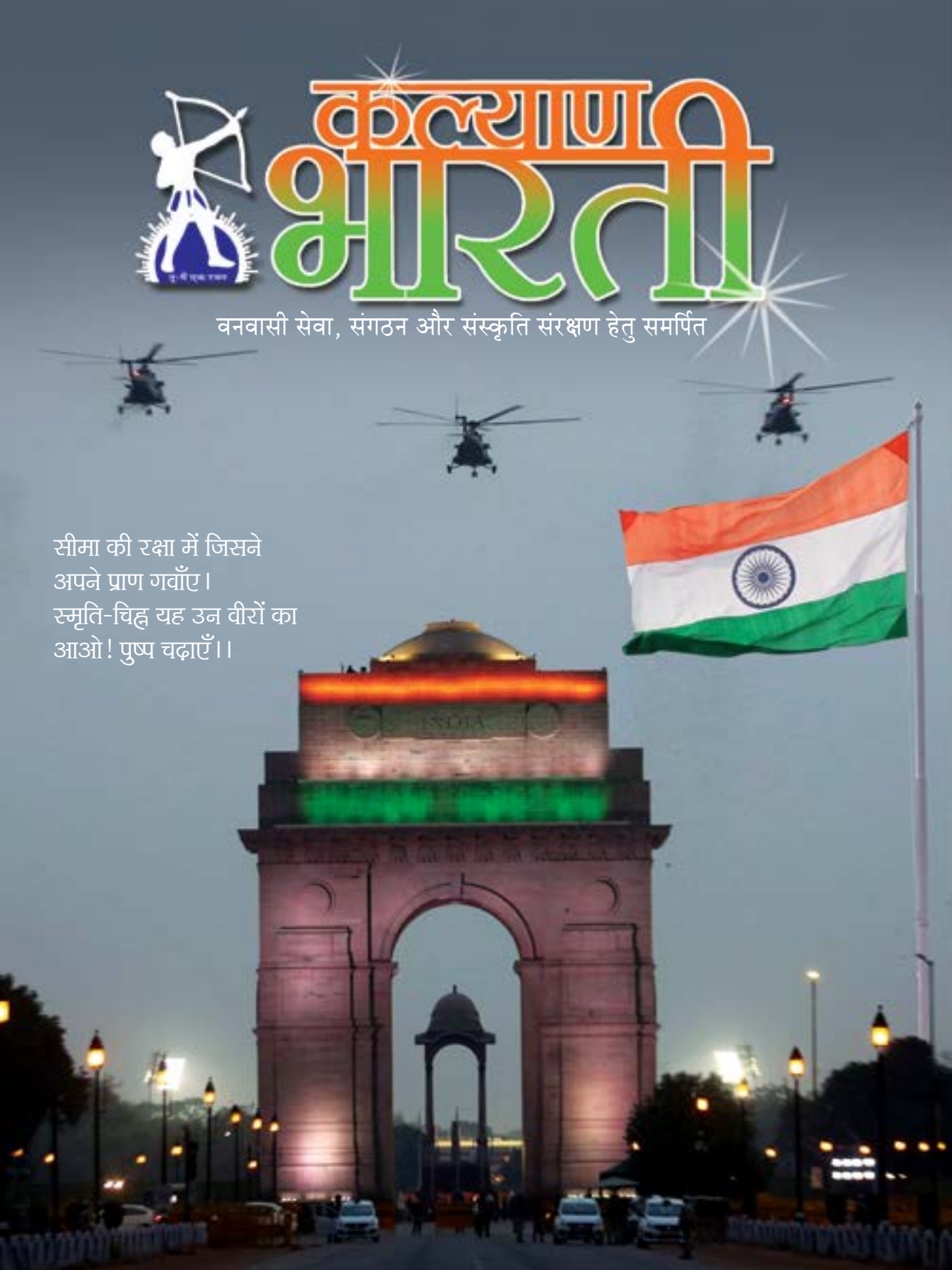

सीमा की रक्षा में जिसने
अपने प्राण गवाँए।
स्मृति-चिह्न यह उन वीरों का
आओ! पुष्प चढ़ाएँ।।

# कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 30, अंक 1
जनवरी-मार्च 2019 ( विक्रम संवत् 2075)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला
गुलमोहर पार्क के पास
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor: Snehlata Baid

## अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- मौलिक द्रष्टा एवं महान् ... 3
- प्रयागराज कुम्भ में जनजाति... 8
- होली मिलन कार्यक्रम... 9
- तीर किसने मारा ? 10
- सुन्दरबन के गोसाबा द्वीप... 11
- कल्याण आश्रम ने मकर संक्रान्ति.. 12
- ग्राम विकास के सूत्र एवं हमारा कार्य... 13
- शोक संवाद... 14
- झाल्दा छात्रावास का वार्षिकोत्सव... 14
- अनुकरणीय... 15
- 39वें वार्षिकोत्सव... 15
- बोधकथा : पिंजरे का पंछी 16
- कविता : संघ सरिता के भगीरथ 16

संपादकीय...

# राष्ट्र हो रक्षित हमारा

सीमा पर बढ़ती आतंकी गतिविधियों और हाल ही पुलवामा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के काफिले पर हुए घातक हमले के संदर्भ में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को सटीक, प्रभावकारी और बहुत ही समसामयिक जवाब दिया है। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में हवाई हमला कर उसके अनेक आतंकी शिविरों को तबाह कर दिया है। पहली बार भारतीय सेना पाकिस्तान के भीतरी क्षेत्र में प्रवेश कर गई। आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अब भारतीय रणनीति सुरक्षात्मक से आक्रामक हो चुकी है। साथ ही इसमें उत्कृष्ट सैन्य रणनीति के साथ सर्वश्रेष्ठ कूटनीतिक रणनीति का भी अद्‌भुत सम्मिश्रण देखा जा सकता है। राष्ट्र कवि दिनकर की पंक्तियाँ हैं-

***सच पूछो तो शर में ही, बसती है दीप्ति विनय की।***
***संधि वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की।।***

आतंकियों के खिलाफ यह बड़ी कार्रवाई इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत अब और आतंकी हमले बर्दाश्त नहीं करेगा और जो भी आतंकी हमले को अंजाम देने की कोशिश करेगा, उसे नष्ट कर दिया जायेगा। भारतीय सेना की इस कार्रवाई में जैश के बड़े कमाण्डर और आतंकियों के प्रशिक्षकों सहित बड़ी संख्या में आतंकी मारे गये। आतंकवाद फैलाने वालों के खिलाफ भारत की यह बड़ी और निर्णायक कार्रवाई पाकिस्तान के लिए बड़ा सबक है। पिछले दो दशकों में भारत ने जितने आतंकी हमले झेले हैं वे अब तक हमारे शासन तंत्र की कमजोरी समझे जा रहे थे। कांधार विमान अपहरणकाण्ड से लेकर कारगिल की लड़ाई, संसद भवन पर हमले, मुम्बई हमले, पठानकोट, उरी और नगरोटा में हमले-सबने भारत को हिलाया और देश के धैर्य और संयम की परीक्षा ली। लेकिन अब भारत का संदेश साफ है कि किसी भी आतंकी कार्रवाई का जवाब देने के लिए वह कोई सीमा तय नहीं करेगा। विग कमांडर अभिनन्दन वर्धमान के मिग 21 का नष्ट होना, पैराशूट से पीओके में उनके उतरने के बाद पाकिस्तान की सेना के हाथों गिरफ्तार होना तथा भारतीय कूटनीति की अद्‌भुत सफलता के कारण महज 60 घंटे में पाकिस्तान द्वारा उन्हें भारत वापस लौटाने की घटना ने मानो राष्ट्रभक्ति को परवान चढ़ा दिया है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि भारत पहले वाला हिन्दुस्तान नहीं रहा, यह हिन्दुस्तान पहले किसी को नहीं छेड़ेगा, लेकिन अगर किसी ने छेड़ा तो फिर उसे छोड़ेगा नहीं। आज हम अपनी सुरक्षा में पूरी तरह सक्षम हैं। साफ दिख रहा है कि पाकिस्तान भारत से भयभीत है। इस सीमित और संक्षिप्त हमले का असर भारत की जनता पर अत्यंत चमत्कारी हुआ है। सारे देश में उत्साह का संचार हो गया है। इस सम्पूर्ण भारतीय कार्रवाई का वैश्विक शक्तियों द्वारा कोई विरोध नहीं हुआ है। अभी भी सम्पूर्ण विश्व में पाकिस्तान अलग-थलग पड़ा है। पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए अगर भारत बालाकोट में एयर स्ट्राइक करने में सक्षम है तो वहां के पाकिस्तानी सैन्य मुख्यालय रावलपिंडी भी ज्यादा दूर नहीं है। स्पष्ट है कि पाकिस्तान को अब बार-बार भारतीय धैर्य के परीक्षण से बचना चाहिए और उसे आतंकवाद के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए।

कल्याण भारती के सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों को होली एवं हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत् 2076 की हार्दिक शुभकामनाएं। इतिशुभम्

***-स्नेहलता बैद***

वर्ष प्रतिपदा पर विशेष

# मौलिक द्रष्टा एवं महान संगठनकर्त्ता डॉ. हेडगेवार

*- आचार्य विष्णुकांत शास्त्री*

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक प्रात: स्मरणीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार को स्मरण करते समय मुझे ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं-

*छिपने नहीं दिया फूलों को, फूलों के उड़ते सुवास ने।*
*रहने नहीं दिया अनजाना, शशि को शशि के मंद हास ने।*

डॉ. हेडगेवार ने अपने को प्रसिद्धि से दूर रखा था। उनके कार्य ने उनको उजागर किया। डॉ. हेडगेवार विलक्षण व्यक्ति थे। उनकी दृष्टि मौलिक थी। वे आजीवन उन समस्याओं से जूझे थे जो हमारे समाज की मूलभूत समस्याएँ थी और उन समस्याओं के समाधान के लिए जो उन्होंने दिशा-निर्देश किया था वह उनका अपना मौलिक सोच-विचार था, स्वकीय था। आपने उनके बचपन के अनेक प्रसंग सुने होंगे। सात वर्ष के बालक ने विक्टोरिया के हीरक जयन्ती के अवसर पर पायी हुई मिठाई कूड़े के ढेर पर यह कहकर फेंक दी-**'वह मेरी रानी नहीं है'**। इसी तरह एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक के समय होने वाली आतिशबाजी को देखने वे नहीं गये-'वह मेरा राजा नहीं है।' 'जो मेरी रानी नहीं है, जो मेरा राजा नहीं है, उसकी खुशी में मैं कैसे खुश हो सकता हूँ। जिसने मेरे ऊपर अत्याचार किया है, मेरे ऊपर शासन किया है, मैं उससे अपने देश को स्वतंत्र करूँगा, मुक्त करूँगा'-यह था मूल भाव उस बालक केशव के मन में। 1905 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा वन्देमातरम् नारे का निषेध करने हेतु रिस्ले सर्क्युलर निकाला गया। 1909 ई. में जब नीलसिटी हाईस्कूल में इंसपेक्टर आया, तो डॉ. हेडगेवार ने सब छात्रों से वन्देमातरम् का नारा लगवाकर इंसपेक्टर को और हेडमास्टर को चकित कर दिया। वे सरकारी स्कूल से निकाल दिये गये अत राष्ट्रीय पाठशाला में पढ़े। 1910 ई0 में बंगाल कौन्सिल ऑफ एज्यूकेशन से उन्होंने मैट्रिकुलेशन पास किया, करीब 19 वर्ष की अवस्था में। कलकत्ता जाकर 5 वर्षों में उन्होंने नेशनल मेडिकल कालेज से डाक्टरी की परीक्षा पास की।

उनमें क्रान्तिकारी चेतना बचपन से ही थी। बंगाल में आकर वे अनुशीलन समिति के सदस्य बने। त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती महाराज और पुलिन बिहारी दास डाक्टर जी के सहयोगी थे। उन लोगों के साथ उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन की दीक्षा ली। जब वे लौटकर 1916 ई0 में महाराष्ट्र गये तो विवाह करने के लिए उन पर बहुत दबाव डाला गया। उन्होंने कह दिया कि मेरी मृत्यु किसी भी समय राष्ट्र का काम करते हुए हो सकती है। मैं कैसे किसी कन्या के जीवन को, भविष्य को अंधकारमय कर दूँ ? उन्होंने विवाह नहीं किया। 1919 ई0 तक वे क्रान्तिकारी आन्दोलन के संगठक के रूप में तत्कालीन मध्यप्रान्त में काम करते रहे। राजस्थान से, पंजाब से उनका सम्पर्क था। योजना थी कि गोवा में एक जहाज आयेगा जर्मनी की तरफ से, जिसके शस्त्रों की सहायता से क्रान्तिकारी सारे देश में व्यापक क्रान्ति कर सकेंगे। वह योजना विफल हुई।

1919 ई0 से वे सक्रिय राजनीति में आये और उन्होंने लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में कांग्रेस में प्रवेश किया। वे मध्य प्रांत कांग्रेस के सहमंत्री बनाये गये। 1920 ई0 में नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन को सफल बनाने के लिए जिन लोगों ने सबसे अधिक परिश्रम किया उनमें एक डॉ. हेडगेवार थे। उस समय महात्मा गाँधी का नारा था 'हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई', 'हिन्दू-मुसलमान की एकता के ऊपर हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता निर्भर

करती है। अत खिलाफत आन्दोलन को हिन्दू अगर समर्थन देंगे तो मुसलमान भी भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता का समर्थन करेंगे' यह युक्ति रखकर 1920 ई0 में गाँधीजी ने नागपुर में खिलाफत आन्दोलन के समर्थन का प्रस्ताव पास कराया। उस समय डॉ. हेडगेवार ने तीन प्रस्ताव रखवाये थे। तीनों प्रस्तावों को गाँधीजी ने अस्वीकार कर दिया था। उनमें एक गो-रक्षा का था। डॉ. हेडगेवार ने कहा कि अगर हिन्दू खिलाफत का समर्थन कर सकता है तो मुसलमान गो रक्षा का समर्थन क्यों नहीं कर सकता? लेकिन गाँधीजी का कहना था कि इस समय मुसलमानों का मन दुखाना नहीं चाहिए। दूसरा प्रस्ताव था-हमें पूर्ण स्वतंत्रता की माँग करनी चाहिए। महात्मा गाँधी ने कहा स्वराज्य में पूर्ण स्वतंत्रता आ जाती है। लेकिन उसके 9 वर्ष बाद पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रयास से कांग्रेस ने रावी के तट पर पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकार किया। 9 साल पहले यह प्रस्ताव डॉ. हेडगेवार ने पेश किया था। तीसरा प्रस्ताव था कि कांग्रेस को विश्व के समस्त पद दलित देशों को पूंजीवादी शक्तियों से स्वतंत्र कराने के लिए प्रयास करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से यह बहुत ही क्रान्तिकारी प्रस्ताव था। किन्तु उस पर लोग हँसे थे कि यह बिल्कुल लड़कपन है। हिन्दुस्तान गुलाम है और सारी दुनिया के गुलाम देशों की आजादी की बात, पूँजीवादी देशों के विरोध की बात यह करता है। वे तीनों प्रस्ताव अस्वीकृत हो गये, लेकिन डॉ. हेडगेवार की मानसिकता का इससे पता चलता है।

1920 ई. के असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर उन्होंने एक वर्ष का कारावरण किया। जब उन पर आपत्तिजनक भाषण करने के लिए राजद्रोह का मुकदमा चला तब उसका जवाब देने के लिए जो उन्होंने अदालत में भाषण किया वह मैजिस्ट्रेट मि. मिली के अनुसार अधिक राजद्रोहपूर्ण था। उन्हें एक वर्ष का कारादण्ड मिला। जब वे लौटकर आये तो उनके सम्मान में जो सभा हुई थी उसकी अध्यक्षता की थी डॉ. खरे ने और उसमें वक्ता थे पण्डित मोतीलाल नेहरू और हकीम अजमल खाँ। ये सब बातें इसलिए बता रहा हूँ कि आपको ज्ञात हो सके कि 1922 ई0 में डॉ. हेडगेवार की स्थिति क्या थी। उसके बाद उन्होंने देखा कि गांधीजी की घोषणा के अनुसार एक वर्ष में आजादी तो मिली नहीं, हिन्दू-मुस्लिम एकता का स्वप्न भी ध्वस्त हो गया। हिन्दू-मुस्लिम दंगे होने लगे। उनका कहना था कि 'हिन्दू मुस्लिम दंगे'- यह बात गलत है। मुस्लिम दंगे करने लगे हैं, हिन्दू पिटने लगे हैं- मोपलास्थान में, कोहाट में, यहाँ तक कि स्वयं नागपुर में भी।

उनको लगा कि कोई बात जड़ में ही गलत है। इस सारी चेष्टा में केवल ऊपर-ऊपर का काम हो रहा है और ऊपर-ऊपर के काम से तत्काल सिद्धि पाने के प्रलोभन में कहीं कुछ गलत हो रहा है। अत: एक गंभीर आत्म-मंथन से 1922 से 1925 ई0 तक डॉ. हेडगेवार गुजरते रहे। इस कालखण्ड में उन्होंने एक अखबार निकाला 'स्वातंत्र्य'। यह नहीं था कि वे प्रसिद्धि के तंत्र से अपरिचित थे। दो अन्य अखबारों से भी उनका सम्बन्ध था और 'स्वातंत्र्य' को उन्होंने एक वर्ष तक चलाया। फिर उनको लगा कि वे सारी बातें जो मैंने अब तक की हैं वे ऊपर-ऊपर से निकल जाती हैं। इन बातों से उन समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता जो मौलिक समस्याएँ हैं, जो जड़ की बात है। आप देखिए कि जिस व्यक्ति ने राजनीतिक क्षेत्र में इतना वर्चस्व प्राप्त किया था, जिसके लिए एक तरफ स्वयं कांग्रेस और दूसरी तरफ हिन्दू महासभा के बड़े-बड़े नेता लालायित थे, उस व्यक्ति ने अपनी सारी अर्जित प्रतिष्ठा को तिलांजलि दे दी और फिर से सोचना शुरू

किया कि बात कहाँ बिगड़ गयी है?

यह बात क्या है कि बात करने से बात बन नहीं रही है? उन्होंने स्वयं आत्म निरीक्षण किया। क्रान्तिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में उनको लगा कि मेरा अकेला बम तो काफी नहीं है यद्यपि मैं बम चला सकता हूँ, बम बना सकता हूँ। स्मरण रहे उनका निशाना अचूक था, उन्हें बम बनाने की अच्छी प्रक्रिया आती थी। उनके 150 क्रान्तिकारी मित्र थे जो उनके अधीन मध्यप्रान्त में काम कर रहे थे, लेकिन उन्हें अनुभवों ने बताया कि साधारण जनता इस आन्दोलन में शामिल नहीं हो सकती अत: उन्होंने कहा कि मेरा अकेला बम पर्याप्त नहीं है। सारा समाज इस समय क्रान्तिकारी विद्रोह करने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए यह रास्ता छोड़ना है। जिस रास्ते पर वे 1910 से 1919 ई0 तक निष्ठा के साथ चले, जिस रास्ते पर चलने के लिए उन्होंने विवाह नहीं किया, धन नहीं कमाया, उस रास्ते को उन्होंने झटक कर छोड़ दिया। वे जिस समय कलकत्ते से डॉक्टरी पास करके मध्यप्रान्त गये थे, उस समय वहाँ कुल 75 डाक्टर थे। वे अगर अपना चेम्बर खोलते तो प्रचुर धन कमा सकते थे। जिस कांग्रेस के साथ वे जुड़े थे, वह तिलक की कांग्रेस थी पर दुर्भाग्य से अगस्त 1920 ई0 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्वर्गवास हो गया और अब तिलक की कांग्रेस गाँधी की कांग्रेस बन गयी।

गाँधीजी की कांग्रेस के साथ भी उन्होंने निष्ठा के साथ सहकार्य किया। गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन के लिए उन्होंने आकाश-पाताल एक किया, कारावरण किया। लेकिन मंथन करते हुए उनको लगा कि महात्मा गाँधी से उनके मतभेद बहुत स्पष्ट हैं। उनकी महात्मा गाँधी के प्रति गंभीर श्रद्धा थी, लेकिन तीन मुद्दों पर उन्हें यह लगा कि गाँधीजी का रास्ता वे स्वीकार नहीं कर सकते। पहला मुद्दा था अहिंसा का। गाँधीजी कहते थे अहिंसा सिद्धान्त की बात है पर डाक्टर जी कहते थे 'अहिंसा' नीति की बात है। मेरे लिए देश की स्वाधीनता प्राथमिक है, अगर देश की स्वाधीनता अहिंसा से आती है तो मैं अहिंसा स्वीकार करूँगा और अगर देश की स्वाधीनता के लिए हिंसा करनी पड़ेगी तो मैं हिंसा से भी परहेज नहीं करूँगा। अहिंसा मेरे लिए सिद्धान्त नहीं है। बल्कि उन्होंने यह भी कहा कि अहिंसा के अतिरेक के कारण हमारा तारुण्य दुर्बल हुआ है, हमारी योद्धा-शक्ति क्षीण हुई है। अहिंसा का अतिरेक देश की चेतना को दुर्बल बना रहा है। दूसरा मुद्दा था खादी का। स्वदेशी का वे स्वागत करते थे। खादी का स्वागत करते हुए भी वे खादी का अनिवार्य प्रयोग स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने कहा कि खादी चरखे से बने, तकली से बने और इससे व्यापक रूप से लोगों को आर्थिक लाभ हो, यह स्वागत योग्य बात है लेकिन अगर अपने देश में कारखाने लगें और अपने देश की मिलों से कपड़े बनें तो इसमें क्या अपराध है? अपने देश का औद्योगीकरण होना चाहिए, अपने देश के औद्योगीकरण से बने हुए माल को स्वीकार करना चाहिए। महात्मा गाँधी के उस अतिरेक पूर्ण औद्योगीकरण विरोधी रुख को उन्होंने अस्वीकार किया। स्वदेशी का समर्थन किया उसी के साथ-साथ औद्योगीकरण का भी समर्थन किया। तीसरी बात और सबसे बड़ी बात थी कि उन्होंने मुस्लिम तुष्टीकरण का विरोध किया। डॉ. हेडगेवार का कहना था कि मुसलमानों को न पुरस्कार दो, न बहिष्कार करो, परिष्कार करो। न पुरस्कार, न बहिष्कार बल्कि परिष्कार। उनका यह कहना था कि मुसलमानों के साथ एकता या समझौता करने का रास्ता दुर्बल होना नहीं है। तुम असंगठित रहोगे तो तुम पिटते रहोगे, तुम्हारी बहू-बेटी को एक गुण्डा छेड़कर जबरदस्ती

उठाकर ले जायेगा और तुम हाय-हाय करके चुप रहोगे तो क्या वह तुम से दोस्ती करेगा? मुसलमान की वह आक्रामक चेतना, वह मिथ्या श्रेष्ठता की भावना हिन्दुओं की कायरता के कारण पनपती है। हिन्दुओं में यह कायरता उनकी व्यक्ति केन्द्रित चेतना.. मैं अकेला हूँ के कारण भर गयी है।

उन्होंने निश्चय किया कि मुझे आधारभूत मौलिक बात यानि हिन्दू समाज का संगठन करना है।

भारतवर्ष की विशिष्ट पहचान एक व्यक्ति ने, दो व्यक्तियों ने नहीं बनायी है। हजारों वर्षों से भारत की जो संस्कृति चली आ रही है वह संस्कृति, वह सारी की सारी चेतना, मूलत: हिन्दू चेतना है और उस चेतना को आधार मानकर ही हम भारत की पहचान कर सकते हैं। इसलिए भारत की राष्ट्रीयता हिन्दू राष्ट्रीयता है। इस बात को दृष्टि के स्तर पर उन्होंने मौलिक रूप से प्रतिपादित कर तमाम अवसरवादी, सामयिक, तात्कालिक-लाभपरक दृष्टियों को उन्होंने अस्वीकार कर दिया। भारत की राष्ट्रीयता मौलिक रूप से हिन्दू राष्ट्रीयता है। हिन्दुत्व ही भारत का राष्ट्रीयत्व हो सकता है और जब तक इस हिन्दुत्व की चेतना को नहीं जगाया जाता तब तक हम अपना आत्म परिचय प्राप्त नहीं कर सकते, हम अपना राष्ट्रीय कर्तव्य नहीं निभा सकते। इस बात का मौलिक चिन्तन दृष्टि के स्तर पर डॉ. हेडगेवार ने किया।

उनका दूसरा चिन्तन कृति के स्तर पर हुआ। कई बार उन्होंने सोचा कि ये जो तमाम संस्थायें चल रही हैं, उन्हीं संस्थाओं में एक और नयी संस्था बढ़ गई तो क्या बात बनी ? ऐसी संस्था बननी चाहिए जो संस्था उस मूल तत्व के साथ जुड़कर अपने अस्तित्व की सार्थकता को प्रमाणित करे। उस नयी कृति के लिए, उस संस्था के लिए उन्होंने जो पद्धति निकाली वह तो बड़ी अद्भुत थी। 1925 ई0 की विजयादशमी को जब पूजनीय डॉक्टरजी ने संघ प्रारंभ किया तो उस दिन उसका नाम निर्धारित नहीं हुआ था, उसका संविधान नहीं था, उसके पास कोष के नाम पर एक पैसा नहीं था, उसका कार्यालय नहीं था, उसका प्रचार नहीं था, उसकी घोषणा नहीं की गयी थी। आप सच बताइये दुनिया में कोई संस्था ऐसी है जिसकी स्थापना करते समय उसके नाम का निर्धारण न हो, उसके सदस्यों की तालिका न बने, उसका संस्थापक मालूम न हो, उसके पास एक पैसा कोष के नाम पर न हो, उसका कोई कार्यालय न हो, उसकी घोषणा भी न की गयी हो! बस, संघ स्थापित हो गया। संघ स्थापित हो गया का मतलब क्या हो गया? अपनी जान पहचान के आठ-दस बच्चों को लेकर उन्होंने विजयादशमी के दिन कबड्डी खेली। उस समय यह पद्धति नहीं थी कि रोज-रोज आना चाहिए। उन्होंने अपनी जान-पहचान के नौजवानों को कहा कि बिना तुम्हारे शक्तिशाली हुए देश कैसे शक्तिशाली होगा? मराठी में एक उक्ति है कि बिना युद्ध किये कहीं स्वतंत्रता प्राप्त होती है ? युद्ध करने के लिए शक्ति होनी चाहिए। इसलिए उनकी पहचान के जितने नौजवान थे उनको उन्होंने कहा, 'तुम लोग किसी न किसी व्यायामशाला में भर्ती हो जाओ'। केवल यही प्रेरणा दी कि व्यायाम करो। उसके दो-तीन महीने बाद यह योजना बनी कि प्रत्येक रविवार को सुबह पाँच बजे सबका एकत्रीकरण होगा। उसके बाद रविवार और गुरुवार को वैचारिक वर्ग चालू हुआ जिसको आजकल 'बौद्धिक-वर्ग' कहा जाता है। आप लोगों को जानकर आश्चर्य होगा कि जुलाई 1926 ई0 में यानी संस्था के बनने के करीब आठ महीने बाद एक बैठक बुलाई गयी कि इसका नाम क्या रखा जाय? नाम का प्रस्ताव एक नहीं आया था, कई नाम आये। उनमें से एक

'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' भी था। डाक्टर जी द्वारा अपनी तरफ से बिना कुछ कहे उस नाम की पुष्टि अन्य मित्रों के द्वारा हुई। उस समय गणवेश आज जैसा नहीं था। चूँकि वे कांग्रेस के 1920 ई0 के अधिवेशन के स्वयंसेवक-प्रमुख थे अत उस समय कांग्रेस का जो गणवेश था वही उन्होंने स्वीकार कर लिया यानी खाकी पैंट, खाकी कमीज, खाकी टोपी और काम बढ़ पड़ा। आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि उस समय तक डॉ. हेडगेवार प्रधान नहीं बने थे। डॉ. हेडगेवार बाद में प्रधान अर्थात् सरसंघचालक चुने गये।

चूँकि तत्कालीन मध्यप्रांत हिन्दी-मराठी भाषी द्विभाषी राज्य था, अत: शुरू में जो संघ की प्रार्थना थी उसमें एक पद मराठी का था, एक पद हिन्दी का था। जब बाद में संघ में सैनिक शिक्षण देना शुरू किया गया तो सब आज्ञाएँ अंग्रेजी में ही दी जाती थी। एक ईसाई सज्जन ने संघ के घोष का निर्माण किया। घोष वर्ग की शिक्षा देने वाला एक सेवा-निवृत्त ईसाई सेना-अधिकारी था। संघ के बारे में कुछ मूर्ख लोग ही कहते हैं कि यह अपरिवर्तनवादी है। सच तो यह है कि संघ अपने जन्म से आज तक निरन्तर विकासशील और परिवर्तनवादी रहा है। बिना परिवर्तन के हम नयी-नयी चुनौतियों के प्रत्युत्तर कैसे देंगे ? याद रखें कि देश की या समाज की या व्यक्ति की उन्नति का एक ही सूत्र है - चुनौती और प्रत्युत्तर (Challenge and response)। आपके सामने जो चुनौती आयी है उसका योग्य प्रत्युत्तर आप दे सकेंगे तो आप आगे बढ़ेंगे। यदि उसके अनुकूल प्रत्युत्तर नहीं दे पायेंगे तो आपका पतन होगा, आप स्थिर नहीं रह सकते। बच्चन जी की एक अच्छी कविता है-

**जो न करेगा सीना आगे पीठ उसे खींचेगी पीछे।**
**जो ऊपर को उठ न सकेगा उसको जाना होगा नीचे।।**
**अस्थिर दुनिया में थिर होकर कोई वस्तु नहीं रहती है।**
**हे मन के अंगार अगर तुम लौ न बनोगे, क्षार बनोगे।।**

अगर अपने हृदय के अंगारे से हम लौ उद्दीप्त नहीं कर सकते तो हमें राख बन जाना पड़ेगा। डॉ. हेडगेवार ने अपने हृदय के अंगारे से लौ उद्दीप्त की जिसका नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। किसी झूठे अहंकार पर वे अड़े नहीं। निरन्तर परिशोधन। हिन्दी और मराठी प्रदशों के बाहर जब संघ गया तो लोगों को यह अटपटा लगा कि प्रार्थना हिन्दी में है और मराठी में है, बंगला में क्यों नहीं? गुजराती में क्यों नहीं ? विचार के बाद प्रार्थना जैसा मानबिन्दु भी डॉ. हेडगेवार ने बदल दिया। उन्होंने फैसला किया कि अगर सर्वभारतीय स्तर पर संघ को विकसित करना है तो प्रार्थना एवं सारी आज्ञायें संस्कृत में होनी चाहिए। 1939 ई0 में यह विचार हुआ एवं डाक्टर जी की मृत्यु के पहले पूना की ओ.टी. सी. (अधिकारी प्रशिक्षण शिविर) में पहली बार संस्कृत की प्रार्थना और संस्कृत की आज्ञायें दी गयी। इस तरह गणवेश एवं प्रशिक्षण के विषय बदलते रहे यानी निरन्तर अपने उद्देश्य एवं परिस्थितियों के अनुकूल संघ में परिवर्तन, संशोधन चलता रहा है।

आज के अर्थप्रधान युग में अर्थ को महत्ता न देते हुए भी इतना बड़ा संगठन खड़ा हो सकता है, उसके द्वारा सहज भाव से आत्मीयता से समर्पण भाव को जगाकर एक सामाजिक समन्वय हो सकता है, शक्ति उत्पन्न हो सकती है, इसको प्रमाणित किया है डॉ. हेडगेवार के जीवन ने। इसलिए आज भी हम उनका स्मरण करते रहते हैं।

हम डाक्टरजी को श्रद्धांजलि देते हुए यही प्रार्थना करते हैं कि -

**'हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब सा बन जाय**
**ओ अधूरी साधना चिर पूर्ण बस हो जाय।'** ❑

# प्रयागराज कुम्भ में जनजाति समागम का अद्‌भुत आयोजन

*- मोहनलाल दास, गुवाहाटी*

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने 12 से 15 फरवरी 2019 को प्रयागराज के कुम्भ मेला में **'जनजाति समागम'** का आयोजन किया । कल्याण आश्रम के उत्तर प्रदेश राज्य इकाई **'सेवा समर्पण संस्थान'** के तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम में देश भर से 29 प्रान्तों के 141 जिलों से 5 हजार श्रद्धालु उपस्थित रहे। अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत से सटे तुत्तिग और म्निगओं से आए श्रद्धालुओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। हिमाचल प्रदेश के कई प्रतिनिधियों को इस समागम में भाग लेने हेतु 45 किलोमीटर की दूरी बर्फ से ढके पहाड़ों को पार कर आना पड़ा। हिमाचल से केरल तक के और अरुणाचल से गुजरात तक के लगभग 100 जनजाति समुदायों का कुम्भ में एकत्रित होना, यह पहली बार हुआ। कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय स्तर पर हुई किसी कार्यक्रम में देश भर से अब तक के सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व शायद इस कार्यक्रम में हुआ ।

जनजाति समागम के भव्य आयोजन हेतु श्री अर्जुदास खत्री (अध्यक्ष) और श्री नीरज अग्रवाल (मंत्री) के नेतृत्व में एक आयोजन समिति का गठन हुआ था।

जनजाति समागम के अवसर पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी में जनजाति समाज के सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक आस्था, जनजाति वीर-वीरांगनाओं एवं सामाजिक सुधारकों आदि के विवरण के साथ चित्र लगाए हुए थे। इसके अलावा कल्याण आश्रम के द्वारा देश भर में चल रहे सेवा और जागरण कार्य का भी सचित्र विवरण दिया गया था। 12 फरवरी को दोपहर 2 बजे पूज्य महामंडलेश्वर श्री रघुनाथदास जी महाराज के कर कमलों द्वारा इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन हुआ। सांस्कृतिक नृत्य दलों के अगुवाई से पूज्य स्वामी जी इस कार्यक्रम परिसर में पधारे।

'जनजाति समागम' का उद्‌घाटन दोपहर 3 बजे पूज्य महा मंडलेश्वर अवधेशानंद जी महाराज के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पूज्य स्वामी अवधेशानंद जी ने जनजाति समाज के साथ बस्तर के नारायणपुर में हुए सम्मेलन में भाग लेने का अनुभव का स्मरण को साझा किया। उन्होंने कहा कि जनजाति समाज के आस्था और संस्कृति सनातन परम्परा का अभिन्न अंग है। इस अवसर पर कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद जी, महामन्त्री श्री योगेश पाठक जी के अलावा दिल्ली के 'इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र' के निदेशक श्री सचितानंद जोशी भी उपस्थित थे । इस अवसर पर जनजाति समाज के पूज्य संतों का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर श्री जगदम्बा मल जी द्वारा लिखित रानी गाईदिन्ल्यु एवं नागावीर हाईपाउ जादोनांग के National Book Trust से प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया।

'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र' और 'सेवा समर्पण संस्थान' के संयुक्त आयोजन में हुई सांस्कृतिक कार्यक्रम में देश भर से आये 55 सांस्कृतिक लोकनृत्य का प्रदर्शन हुआ। जनजाति समाज में स्थित आस्था की अभिव्यक्ति इस कार्यक्रम के द्वारा प्रस्तुत की गई। इस कार्यक्रम हेतु जनजाति कार्य मंत्रालय का भी सहयोग प्राप्त था। सांस्कृतिक

नृत्य प्रदर्शन का कार्यक्रम 12 से 15 फरवरी तक प्रतिदिन चला। प्रथम दिन 12, दूसरे दिन 20 तीसरे दिन 19 और चौथे दिन 4 लोक नृत्यों का प्रदर्शन कुम्भ के दौरान हुआ। इस मंच सें श्री बीरबल सिंह, श्री फूलचंद भाई कोकणा, श्री सतुमहाराज, श्री रवी उरांव, श्रीमती अनिंग जेलियांग जैसे विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए।

14 फरवरी को संगम स्नान हेतु शोभायात्रा का आयोजन हुआ। इस शोभायात्रा का नेतृत्व पूज्य शंकराचार्य वासुदेवानंद जी महाराज ने किया। शोभायात्रा में पूज्य महा महामंडलेश्वर यतीन्द्रनाथ जी महाराज, रघुनाथ जी महाराज के अलावा देश भर से आये 169 जनजातीय साधु-संतों एवं धार्मिक नेताओं ने भाग लिया। कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय उपाध्यक्षा श्रीमती नीलिमा पट्टे शोभायात्रा का नेतृत्व कर रही थीं। दो किलोमीटर से भी अधिक लंबी शोभायात्रा का सभी ने स्वागत किया। श्रद्धालु नाचते गाते भारत माता की जय, गंगा मैया की जय, प्रयागराज की जय इस तरह नारे लगाते हुए शोभायात्रा में चल रहे थे। संगम स्थान पर स्नान होने के बाद पूज्य संत-वृन्दों ने प्रतिभागियों को आशीर्वाद दिया। सभी लोगों ने संगम तट पर भी नृत्य प्रस्तुत किए एवं आस्था की डुबकी लगाई। पूरे संगम परिसर में शोभायात्रा चर्चा का विषय बन गई थी। समाचार माध्यमों में भी कार्यक्रम की चर्चा एवं सराहना हुई।

कार्यक्रम समापन के दिन माननीय सोमया जुलू जी का भाषण हुआ। उन्होंने कुम्भ के महत्व के बारे में देश भर से आये प्रतिनिधियों को अवागत कराया। पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले की घोर निंदा करते हुए **जनजाति समागम** ने शहीद जवानों की आत्मा की शान्ति एवं परिवारजनों को गहरे दु:ख से उबरने के लिए ताकत प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई। साथ ही इसका प्रत्युत्तर देने हेतु प्रधानमंत्री का हाथ मजबूत करने हेतु भी सभी प्रतिनिधियों ने प्रार्थना की एवं दो मिनट तक मौन रहे। यह कार्यक्रम विश्व हिन्दू परिषद् के लिए प्राप्त परिसर में आयोजित किया था। कुम्भ में श्रद्धालुओं को ठहरने हेतु विश्व हिन्दू परिषद का परिसर, पूज्य स्वामी रघुनाथ दासजी का आश्रम परिसर, स्वामी यतीन्द्रनंद गिरी जी के मंडप और सूर्यकान्त जालान जी का परिसर आवासीय व्यवस्था हेतु उपलब्ध हुआ। इन परिसरों में प्रतिनिधियों के लिए भोजन का प्रबंध भी किया गया था। जनजाति समागम में पधारे सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद के पैकेट के आलावा जनजाति समागम का स्मृति चिह्न आदि भेंट स्वरुप दिए गये । सभी लोग एकात्मता की अनुभूति लेकर अपने अपने गंतव्य स्थान लौटे। ❑

## होली मिलन कार्यक्रम

*- कुसुम सरावगी*

गत 19 मार्च 2019 उत्तर हावड़ा महिला समिति की बहनों ने आनन्दपूर्ण माहौल में नृत्य, गीत के साथ एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम में 90 से अधिक महिलाएं उपस्थित थीं। ❑

संस्मरण

# तीर किसने मारा ?

*- अतुल जोग, अ.भा.संगठन मंत्री*

सन् 2010 में अरुणाचल विकास परिषद द्वारा सीमान्त दर्शन यात्रा के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। अरुणाचल प्रदेश के 97 कार्यकर्ताओं ने इसमें भाग लिया। 10 टीम में सभी कार्यकर्ताओं को विभाजित किया गया और इन टीमों ने अलग-अलग क्षेत्रों में सभी सीमावर्ती गांवों में जाकर परिस्थिति का अध्ययन किया। ऐसी ही एक टीम के साथ जाने का मुझे सौभाग्य मिला। हमारी टीम अपर सियांग जिले के मेचुखा सर्कल क्षेत्र में गई थी। कठिन रास्ता, दुर्गम पहाड़, ऊंची-ऊंची चोटियाँ, घने बादल और रिमझिम बारिश में ठिठुरने वाली ठंडक, हम लोग विभिन्न गांवों में जा रहे थे। सभी लोगों ने एक ही प्रश्न पूछा कि आप लोग कौन हैं ? आप सरकारी लोग हैं कि किसी पार्टी के लोग हैं ? किसलिए आए हैं? कार्यकर्ताओं ने बताया हम अरुणाचल विकास परिषद (कल्याण आश्रण की इकाई) के लोग हैं और आपका हालचाल पूछने आए हैं। गांव वाले बोले कि देश आजाद होने के बाद पहली बार कोई हमारी पूछताछ करने आया है। गांव वालों ने बताया की पास ही एक छोटा-सा गांव है सेसाँग, वहाँ चलते हैं। सभी लोग बड़े उत्साह के साथ तैयार हो गए। वहाँ गांव वाले हमारे टीम को एक छोटी-सी गुफा में ले गए। गुफा में घुप्प अंधेरा था। एक व्यक्ति ने टॉर्च जलाई तो देखा कि वहाँ छः सात फुट ऊँचा एक पत्थर था। वहाँ रहने वाली बौद्ध मतावलंबी मेंबा जनजाति के लोगों ने बताया कि इस पत्थर पर सिक्खों के गुरु नानक देव बैठे थे। गुरु नानक देव अपनी दक्षिण एशिया की यात्रा के समय असम के धुबड़ी, गुवाहाटी स्थित कामाख्या, हाजो के हयग्रीव माधव के दर्शन करते हुए वर्तमान अरुणाचल होकर तिब्बत जाते समय वहाँ आए थे। गुरु लगभग एक सप्ताह वहाँ रहे थे। उस पत्थर के पास में ही एक पत्थर का बना प्राकृतिक स्नानागार है, वहाँ से छोटी सी नदी बहती है। वहाँ के लोगों ने यह भी बताया कि यहाँ गुरु ने स्नान किया था। उस यात्रा में उनके साथ उनका सेवक भाई मर्दाना भी था। गुरु नानक देव ने वहाँ की मेंबा जनजाति के लोगों को उपदेश दिया था, इसलिए मेंबा लोग उनको आज भी अपना गुरु मानते हैं। वहाँ से थोड़ी दूरी पर भारतीय सेना द्वारा एक गुरुद्वारा बनाया गया है। वहाँ पर भी इस इतिहास का वर्णन मिलता है। मेरे मन में प्रश्न आया कि गुरु नानक देव सिक्खों के गुरु थे फिर भी उन्होंने इन बौद्ध मतावलंबियों को ज्ञान दिया। इस बात को पाँच सौ साल हो गए लेकिन गांव के लोग आज भी बड़े गर्व के साथ इस बात को कहते हैं। आज के आधुनिक जीवन में वाहनों से यात्रा करते हैं तो भी हम थक जाते हैं, लेकिन हमारे भारत के संत-महात्मा समाज जागरण हेतु पैदल भ्रमण करते थे। गुरु नानक देव के समकालीन असम में हुए वैष्णव संत शंकरदेव (1449-1568) ने भी अपनी युवावस्था में पूरे भारतवर्ष का बारह वर्ष तक भ्रमण किया था।

सेसाँग जाने के बाद हमें लग रहा था कि हम कितने दूर आए हैं, मानों कितना बड़ा तीर मारा है, बहुत बड़ा पराक्रम किया है। किंतु गुरु नानक देव की कहानी सुनी तो लगा कि पाँच सौ वर्ष पूर्व उन्होंने ऐसे दुर्गम क्षेत्र में पैदल यात्रा कर कितना बड़ा साहसिक काम किया था। मन में फिर प्रश्न आया कि तीर किसने मारा ? उत्तर मिला गुरु नानक देव ने। इसी कारण आज हमारा देश अखंड, एकात्म है। उन महापुरुषों को शत्-शत् नमन, और मेंबा जनजाति के समाज को भी, जिन्होंने उन यादों को आज भी संजोए रखा है। इतना ही नहीं हर वर्ष मार्च महीने में यहाँ छोटा सा मेला भी लगता है। ❑

# सुन्दरबन के गोसाबा द्वीप में प्रीतिलता छात्रावास का भव्य उद्घाटन

*- तारा माहेश्वरी*

गोसाबा प्रीतिलता छात्रावास का उद्घाटन यानि एक लम्बे समय से प्रतीक्षारत कार्य की पूर्णाहुति! 2012 से जो सपना पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने अपने हृदय में जो संजो रखा था, उसी सपने को साकार करने के लिए समाज के उदारमना दानदाताओं ने सहयोग दिया। उसी स्वप्न का मूर्तरूप है गोसाबा (सुन्दरवन) में 100 छात्राओं की आवासीय क्षमता से युक्त 4 एकड़ में बना यह भव्य छात्रावास।

भवन का उद्घाटन 10 फरवरी 2019 वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम उरांव एवं भारत सेवाश्रम के स्वामीजी शुभोरूपानंद महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय राधा गोविन्द मन्दिर के पुजारी श्री गोविन्द दास बाबा भी उपस्थित थे। सभी स्थानीय लोगों एवं छात्राओं के साथ हमने शोभायात्रा इसी मन्दिर से आरंभ की। शोभायात्रा में लगभग 300 लोग थे। जनजातीय समाज के लोग अपनी पारम्परिक वेशभूषा में नृत्य करते हुए उस दिन अलग ही समा बांध रहे थे। वनवासियों के पवित्र मनोभाव उनके उल्लसित चेहरों से प्रकट हो रहे थे। मृदंग एवं डांडिया की लय पर उनके पैर थिरक रहे थे। भारतमाता की जय एवं वंदे मातरम् के उद्घोष से सम्पूर्ण वातावरण गूंज रहा था।

गोसाबा में सर्वप्रथम 2012 में 12 बालिकाओं को लेकर किराये के घर में छात्रावास प्रारंभ किया गया था। बालिकाओं के संस्कार एवं विकास को देखकर स्थानीय जनजातीय समाज के लोग चाहते थे कि हम और बालिकाओं को प्रवेश देवें, परन्तु उस समय व्यवस्था नहीं थी। किन्तु एक भव्य छात्रावास के निर्माण का स्वप्न सभी कार्यकर्ताओं के मन में था। 2015 में छात्रावास हेतु जमीन खरीदी गई। तथा उसी वर्ष बाल विदुषी पूज्या विजया उर्मलिया के श्रीमुख से कोलकाता महानगर में विराट भागवतकथा का आयोजन करवाया गया। पुनः 2018 में विजयाजी के मुखारविन्द से श्रीरामकथा का भव्य आयोजन किया गया। इन दोनों कथाओं से प्राप्त अनुदान सुन्दरवन में छात्रावास के निर्माण कार्य के लिए समर्पित किया गया। कार्य के पवित्र उद्देश्य को देखते हुए कोलकाता तथा हावड़ा महानगर के सहयोगकर्ताओं ने छात्रावास के निर्माण हेतु हृदय से सहयोग दिया। 2016 के जून में निर्माण कार्य आरंभ हुआ एवं 2019 में बसंत पंचमी के दिन श्रीराम कृपा से उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ।

लगभग 65 गांवों के 3500 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। उस क्षेत्र के हमारे 50-60 एकल विद्यालयों के आचार्य भी आए। सरस्वती पूजा के यजमान के रूप में श्री कीनूराम सरदार तथा उनकी धर्मपत्नी ने मनोयोग से भाग लिया।

मंचासीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम उरांव, विशिष्ट अतिथि पूज्यपाद शुभोरूपानन्दजी महाराज, अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख श्रीशंकरलाल जी अग्रवाल, महिला अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला बागड़ी एवं अन्य गणमान्य महानुभावों ने अपने विचार प्रकट किए। शुभोरूपानन्दजी ने हमारे कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुआ कहा कि जनजाति समाज का उत्थान ही देश का उत्थान है। शिक्षित नारी ही परिवार, समाज को एक नई राह दिखा सकती है। बालिकाओं की शिक्षा एवं संस्कारों का बीजारोपण इस छात्रावास में होता रहेगा। ये बालिकाएं ही आगे चलकर देश के नव निर्माण में सहभागी बनेंगी। उद्घाटन कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री परेश चन्द्र मण्डल ने किया।

इस समय 62 छात्राओं का प्रवेश हो चुका है एवं 500 छात्राओं के आवेदन पत्र आए हुए हैं। चरैवेति-चरैवेति के उद्घोष को चरितार्थ करते हुए हम सबको आगे बढ़ते ही रहना है। इस कार्य को समापन न मानकर हम नए कार्य का आरंभ मानकर निरंतर ऐसे कार्यों के लिए प्रयासरत रहें, यही हम सभी कार्यकर्ताओं का सौभाग्य होगा।

छात्रावास का भवन सुविधायुक्त एवं सुन्दर बना है। प्रार्थना कक्ष, भोजन कक्ष, व्यवसायिक एवं सिलाई प्रशिक्षण कक्ष, अतिथि कक्ष सहित बालिकाओं के निवास हेतु अनेक कक्ष बने हैं। बालिकाओं के निवास हेतु जो कक्ष बने हैं उनका नामकरण देश की महान वीरांगनाओं के नाम पर किया गया है ताकि बालिकाओं को सतत् देशभक्ति की प्रेरणा मिल सके। लगभग 250 कार्यकर्ता कोलकाता-हावड़ा महानगर से गये थे। छात्रावास निर्माण का कार्य कोलकाता-हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख श्री सत्यनारायण जी केजरीवाल की देखरेख में सम्पन्न हुआ। प्रतिमाह आप गोसाबा जाकर निर्माण कार्य का अवलोकन कर समुचित दिशा निर्देश प्रदान करते रहे।

छात्रावास की वर्तमान प्रभारी रेवती मण्डल का छात्राओं के प्रति समर्पित भाव सचमुच स्तुत्य है। 10 फरवरी 2019 छात्रावास परिसर में लगभग 3000 लोगों ने खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण किया। सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं छात्राओं का उत्साह चरम पर था। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार एवं पर्यावरण का ऐसा अनूठा संगम पूरे पश्चिम बंगाल में अद्वितीय है। शहरी कोलाहल से दूर प्रकृति की गोद में बसा यह केन्द्र पहली नजर में ही आपको आकर्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। ❑

# कल्याण आश्रम ने मकर संक्रान्ति को नया अर्थ दिया

*- रजनीश गुप्ता*

धार्मिक परम्पराओं का समयानुकूल सामाजिक परिवर्तन होने से ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम ने मकर संक्रान्ति के पर्व को एक नई दिशा दी है। सभी कार्यकर्ता संक्रान्ति के पूर्व कई दिनों तक सघन परिवार सम्पर्क कर वनवासी सेवाकार्य के महत्व एवं स्थानीय स्तर पर लगने वाले कैम्प की पूरी जानकारी सम्पर्कित परिवार को देते हैं। इस वर्ष कोलकाता एवं हावड़ा महानगर में 100 से अधिक स्थानों पर कैम्प लगाए गए। प्रतिवर्ष कैम्पों की संख्या में आशातीत वृद्धि इस बात का संकेत है कि समाज वनवासियों के प्रति जागरुक हो रहा है एवं कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को सभी प्रकार का सहयोग करने हेतु तत्पर हुआ है। संगठन से जुड़े सभी कार्यकर्ता (लगभग 600) मकर संक्रान्ति के दिन पूरा समय संग्रह हेतु कैम्पों में देते हैं एवं हर्ष का विषय है कि 11,000 से अधिक परिवारों तक कल्याण आश्रम का संदेश पहुंचता है, अनुदान मिलता है। परिणामस्वरूप प्रचुर मात्रा में नकद धनराशि एवं वस्तुएं एकत्रित होती हैं। ध्यातव्य है कि संक्रान्ति पर एकत्रित सामग्री न केवल बंगाल के वनवासी गांवों अपितु बिहार, ओड़िशा एवं उत्तर पूर्व के सभी प्रांतों में उनकी आवश्यकता के अनुरुप प्रेषित की जाती है। जीवनोपयोगी सभी वस्तुएं यथा कम्बल, धोती, चादर, गमछा, साड़ी, लालटेन, टॉर्च, दरी, बर्तन, बाल्टी आदि वस्तुएं प्रचुर मात्रा में कैम्पों में एकत्रित हुई। कहा जा सकता है कि कल्याण आश्रम ने हिन्दू समाज की दान देने की प्रवृत्ति को एक सकारात्मक राष्ट्रीय मोड़ देकर संक्रान्ति पर्व को सही अर्थों में सम्यक् क्रान्ति बनाया है। ❑

# ग्राम विकास के सूत्र एवं हमारा कार्य

*- बिन्देश्वर साहु अ.भा.ग्राम विकास प्रमुख, वनवासी कल्याण आश्रम*

भारतवर्ष गाँवों का देश है। अपने देश में लगभग 6.5 लाख गाँव हैं। गाँवों में उपलब्ध संसाधनों के विकास से ही गाँव का विकास सम्भव है। सरकार द्वारा गाँवों के विकास के लिए हजारों करोड़ की योजनाएं प्रत्येक वर्ष बनाई जाती हैं परन्तु गाँव आज भी विकसित, शिक्षित एवं स्वावलम्बी गाँव नहीं बन सके। विदेशी सोच पर आधारित विकास नीति के कारण हमारी भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हुई। किसानों के खेतों तक उचित मात्रा में पानी नहीं पहुँचा, भारतीय नस्ल की गायें समाप्ति की कगार पर पहुँच गई। जंगल 50 प्रतिशत नष्ट हो गए एवं हम ग्रामवासियों को समाज एवं देश के प्रति जवाबदेह बनाने में भी विफल रहे। शिक्षा एवं स्वास्थ्य की कारगर नीति हम नहीं बना पाये। जिसके कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी रही। आज भी गलत नीतियों के कारण मन में ऐसी धारणा बन गई है कि जो भी काम होगा सरकार करेगी, यही वजह है गाँव के विकास में ग्रामीणों की सहभागिता नहीं के बराबर है। हाँ-विकास की प्रक्रिया में Infrastructure बढ़ा लेकिन प्राकृतिक संसाधन कम होते जा रहे हैं। इसके कारण लोगों की मानसिकता में बदलाव हो रहा है और नये-नये प्रश्न उभर रहे हैं। इसमें सामाजिक असमानताएं, विस्थापन में बढ़ोतरी, रोजगार की कमी आदि शामिल है। भारतीय चिंतन कहता है ऐसी समस्याओं का उत्तर अपने गाँव को समझकर (अध्ययन कर) उसमें सुधार लाकर दे सकते हैं। गाँव के जीवन का आधार कृषि जीवन है। कृषि जीवन का आधार गौ वंश था। गौ आधारित कृषि तथा कृषि आधारित गाँव हमारे पारिवारिक जीवन के सूत्र थे। इस सूत्र को धीरे-धीरे पाश्चात्य प्रभाव ने समाप्त सा कर दिया है। अतएव ग्राम विकास के लिए गौ आधारित कृषि को विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने कहा है कि यह भूमि मात्र भूमि नहीं बल्कि सम्पदा है। भू-सम्पदा का संरक्षण करना हमारा कर्त्तव्य है, जल भी हमारी सम्पदा है, जल का संरक्षण करते हुए वनों का संरक्षण एवं संर्वधन आवश्यक है। इस प्रकार भू-जल और वन-सम्पदा को अपनी सम्पदा समझकर सबके लिए जीने वाला जीवन श्रेष्ठ जीवन हो, ऐसी सोच हम सबको बनानी है। 'ग्राम' यह राष्ट्र की लघुतम इकाई है। इस इकाई की प्रगति में ही राष्ट्र की प्रगति निहित है। इसी से भारत का भाग्य बदलेगा। इन्ही संकल्पनाओं को लेकर अ.भा. वनवासी कल्याण आश्रम ने ग्राम विकास का कार्य प्रारम्भ किया।

**हमारा कार्य, वर्तमान स्थिति:-**

- कृषि विकास केन्द्र - 51
- कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र - 106
- स्वयं सहायता समूह - 3109
- संकुल ग्रामोदय योजना - 18 (संकूल)
- ग्राम विकास किरण - 92 (उदय प्रभात)
- अन्य - 08

**झारखण्ड में कार्य के परिणाम:-**

झारखण्ड राज्य के राँची जिला में एक रातू प्रखण्ड है। रातू प्रखण्ड में 27 स्वयं सहायता समूह हैं, इसके आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विकास का नेतृत्व श्रीमती अंजू देवी करती है। शिल्पा, प्रगति एवं आकृति समूह को बैंक लोन 2.50 (ढाई-ढाई) लाख रूपये दिलाया गया है। वर्षों से श्री सूरज उराँव की 9 एकड़ कृषि भूमि मुस्लिम दम्पति द्वारा बंधक (गिरवी) थी, जिसे शिल्पा, प्रगति एवं आकृति समूह द्वारा 1 लाख 25 हजार रुपये देकर छुड़ा ली गई और सूरज उराँव को खेती के लिए पुन: मिल गई। उपज का 50 प्रतिशत हिस्सा ऋण चुकाने हेतु दिया जाता है।

इसी प्रकार गृहिणी एवं प्रगति समूह द्वारा किराना दूकान तथा टेन्ट की दूकान की गई है। शेष सभी समूह को 25 हजार से 1 लाख रुपये तक बैंक लोन दिलवाया गया है। इन सभी समूहों द्वारा कृषि एवं पाल्ट्री के कार्य किए जा रहे हैं। स्वच्छ भारत मिशन के तहत समूह द्वारा 677 शौचालय का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। श्रद्धा जागरण के तहत् हनुमान जी का भव्य मंदिर बनाया जा रहा है। वनवासी समाज में जागृति, समरसता तथा एकता का भाव निर्माण हुआ है। धर्मान्तरण पर अंकुश लगा है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक विकास के प्रति जागरूकता आयी है। अधिकांश समूह की बहनें 1000-3000/- रुपये तक मासिक आय अर्जित कर रही हैं। परम्परागत त्यौहार मिलकर मनाती हैं। बेटी की शादी एवं सुरक्षा में सहयोग किया जा रहा है। समूह की सक्रियता एवं आवश्यकता पूरक कार्य प्रारंभ करने से अल्पसंख्यक समुदाय का दब-दबा समाप्त हुआ है। ❑

## शोक संवाद

- गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर परिकर का रविवार 17 मार्च 2019 को उनके निजी आवास पर निधन हो गया। वे 63 वर्ष के थे। गोवा के चार बार मुख्यमंत्री और पूर्व रक्षामंत्री परिकर फरवरी 2018 से ही अग्नाशय के कैंसर से जूझ रहे थे।
- कोलकाता महानगर की सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता श्रीमती गीता मोहता का दिनांक 6 मार्च 2019 को निधन हो गया। वर्षों तक उन्होंने महानगर की विद्यालय सम्पर्क एवं औषधि संग्रह योजना प्रमुख का दायित्व निर्वाह किया।
- विदर्भ वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्व उपाध्यक्ष एवं परतवाड़ा में वर्षों तक कोरकु समाज के बीच कार्यरत रहे श्री नाना पारडीकर का 93 वर्ष की आयु में नागपुर में स्वर्गवास हो गया।

*दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि!* ❑

## झाल्दा छात्रावास का वार्षिकोत्सव

*- कविता टिबड़ेवाल*

बंगाल के झाल्दा छात्रावास के छात्रों ने प्रथम बार 23 दिसम्बर 2018 को अपना वार्षिकोत्सव मनाया। श्रीमती पिंकी रिजवाल, करुणा अग्रवाल, निर्मला पाड्या ने दीप प्रज्ज्वलन एवं भारतमाता के चित्र पर पुष्पांजलि समर्पित कर वार्षिकोत्सव का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर झाल्दा नगर के अनेक गणमान्य महानुभाव एवं महिलाओं ने उपस्थित रहकर छात्रों का उत्साहवर्धन किया। छात्रों द्वारा शुद्ध संस्कृत में मंत्रोच्चार, देशभक्ति गीत एवं विविध शारीरिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। ध्यातव्य है कि विगत कई महीनों से झाल्दा नगर की बहनें छात्रावास के छात्रों से निरन्तर सम्पर्क रखते हुए उनकी सभी आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित कर रही हैं। सभी का एक ही मनोभाव है कि हमारे वनवासी छात्र अच्छी शिक्षा प्राप्त कर एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकें। ❑

## कम्प्यूटर एवं सिलाई प्रशिक्षण

गोसाबा के नवनिर्मित प्रीतिलता छात्रावास से 7 तथा पुरुलिया के निवेदिता छात्रावास से 10 छात्राओं ने कल्याण भवन में 2 से 13 मार्च 2019 तक कम्प्यूटर प्रशिक्षण लिया। पुन: इन बालिकाओं ने 20 मार्च से 5 अप्रैल तक (15 दिन) सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके साथ हमारी पूर्णकालीन कार्यकर्ता सोनिका दी एवं रेवती दी आई थीं। ❑

## अनुकरणीय

- हावड़ा महानगर के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री मोहनजी गर्ग का पूरा परिवार वनवासी सेवा एवं संगठन कार्य के प्रति हृदय से समर्पित है। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती लक्ष्मी देवी गर्ग के दोनों घुटनों का महानगर के प्रसिद्ध अस्पताल मेडिका में प्रत्यारोपण किया गया। संयोगवश ऑपरेशन के दूसरे दिन ही गुवाहाटी से खेलकूद महोत्सव के पश्चात् वनवासी बालक-बालिकाओं का हावड़ा में आना हुआ। लक्ष्मी देवी को अपनी पीड़ा के साथ-साथ वनवासी बंधुओं की भी चिंता थी। उनकी देखभाल में किसी तरह की कमी न रह जाए इस भाव से अपनी पीड़ा को नजरदांज करते हुए उन्होंने प्रात:काल ही फोन कर अपने पति मोहनजी से निवेदन किया कि 'आपकी आवश्यकता वनवासी बच्चों के लिए अधिक है। बच्चों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जाए।' उनकी स्वयं की देख रेख नर्सें अच्छी प्रकार कर रही हैं। अत: अस्पताल न आकर बच्चों का ध्यान रखें। लक्ष्मीजी की निष्ठा और समर्पण ने जहां मोहन जी को कार्य करने की प्रेरणा दी वहीं सभी कार्यकर्ताओं के मन भी सहज ही श्रद्धा से नत हो गया। यह संवेदनशीलता व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में जागृत हो, यहीं हमारे कार्य की उपलब्धि है।
- गत 9 मार्च 2019 जोड़ामन्दिर समिति की कार्यकर्ता श्रीमती अल्पना नेवटिया के पति श्री अरुण नेवटिया दिवंगत हो गए। अल्पना जी ने दु:ख की इस घड़ी में भी वनवासी बंधुओं का स्मरण किया एवं उनके द्वादशा के दिन कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु बंगाल के छात्रावासों से आई छात्राओं को भोजन करवाया। कल्याण आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा की चिर शांति की कामना करता है। ❑

## 39वें वार्षिकोत्सव में 'सौरम संस्कारा री' नाटक की शानदार प्रस्तुति

सनातन अथवा हिन्दू धर्म की संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है। हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन को पवित्र एवं मर्यादित बनाने के लिए संस्कारों का आविष्कार किया। धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इन संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति की महानता में इन संस्कारों का महती योगदान है। कोलकाता के सुप्रसिद्ध कलामन्दिर प्रेक्षागृह में 16 दिसम्बर 2018 को पूर्वांचल कल्याण आश्रम के 39वाँ वार्षिकोत्सव में इन्हीं 16 संस्कारों के महत्व को दर्शाने वाला नाटक ''सौरम संस्कारा री'' की प्रभावी प्रस्तुति हुई। नाटक का निर्देशन श्रीमती शुभ्रा अग्रवाल ने किया तथा अभिनय कल्याण आश्रम परिवार के कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष माननीय कृपाप्रसाद सिंह ने की एवं मुख्य वक्ता का आसन ग्रहण किया अरुणाचल प्रदेश से पधारे Nyishi Indigenous faith and cultural society के अध्यक्ष श्री पाई दवे नी। उन्होंने बहुत ही सरल एवं मार्मिक ढंग से उत्तर पूर्व के राज्यों में जनजाति धर्म एवं संस्कृति संरक्षण हेतु चल रहे कार्यक्रमों एवं कार्यों की जानकारी दी। श्रीमती तारा माहेश्वरी ने कल्याण भारती के सेवा विशेषांक का लोकार्पण कार्यक्रम अध्यक्ष माननीय कृपा प्रसाद सिंह के कर कमलों से करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा प्रभु श्रीराम के चित्र पर पुष्पार्पण एवं बहन शशि मोदी के वन्देमातरम् गीत के गायन से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन कोलकाता महानगर के संगठन मंत्री श्री महेश मोदी ने किया। ❑

बोधकथा.....

# पिंजरे का पंछी

एक सन्त के आश्रम में एक शिष्य कहीं से एक तोता ले आया और उसे पिंजरे में रख लिया। सन्त ने कई बार शिष्य से कहा इसे यूं कैद न करो। परतंत्रता संसार का सबसे बड़ा अभिशाप है। किन्तु शिष्य अपने बालसुलभ कौतुहल को न रोक सका और तोते को पिंजरे में बन्द किये रहा। तब संत ने सोचा कि तोते को ही स्वतंत्र होने का पाठ पढ़ाना चाहिए। उन्होंने पिंजरा अपनी कुटी में मंगवा लिया और तोते को नित्य ही सिखाने लगे- ''पिंजरा छोड़ दो, उड़ जाओ...।'' कुछ दिन में तोते को वाक्य भली-भांति रट गया। एक दिन सफाई करते समय भूल से पिंजरा खुला रह गया। संत कुटी में आये तो देखा कि तोता बाहर निकल आया है और बड़े आराम से घूम रहा है। साथ ही ऊंचे स्वर में कह भी रहा है-''पिंजरा छोड़ दो, अभी उड़ जाओ...। संत को आता देख वह पुन: पिंजरे के अन्दर चला गया और अपना पाठ बड़े जोर-जोर से दुहराने लगा। संत को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, साथ ही दु:ख भी। वे सोचते रहे, इसने केवल शब्द को ही याद किया। काश! वह इसका अर्थ भी जानता होता तो यह इस पिंजरे से स्वतंत्र हो गया होता। ❑

## अमृत वचन

- सच तो यह है कि हिंसा उन लोगों पर पलटवार करती है जो हिंसा फैलाते हैं। *-आर्थर कानन डायल*
- वास्तव में महान पुरुष वही है, जो न किसी का शासन मानता है और न किसी पर शासन करता है। *-खलील जिब्रान*
- खुशी ही जीवन का अर्थ और उद्देश्य है और मानव अस्तित्व का लक्ष्य और मनोरथ। *-अरस्तू*

कविता.....

# संघ सरिता के भगीरथ

- लक्ष्मीनारायण भाला ''लक्खीदा''

जन्मदिन पर पुष्प अर्पित।
संघ-सरिता के भगीरथ।। ध्रु ।।

आत्म-गौरव भूल कर जो,
आत्म-विस्मृत हो गया था।
राज करना भूल कर जो,
दासता में खो गया था।
उस प्रताड़ित और विभाजित
जन-जनार्दन के उपासक ।। 1 ।।
जन्मदिन पर पुष्प अर्पित..

विविध भाषा, विविध मत को
बाँट कर जो देखता था।
सांस्कृतिक एकात्मकता के
सूत्र को ना खोजता था।
उस भ्रमित हिन्दू-हृदय के,
जागरण के पथ-प्रदर्शक ।। 2 ।।
जन्मदिन पर पुष्प अर्पित..

नित्य मिलना, मित्र बनना,
सुख-दुखों में साथ रहना ।
नगर-वन-ग्रामीण जन में,
देश-सेवा भाव भरना ।
राष्ट्र के हित, व्यक्तिगत सुख
त्याग के हे! श्रेष्ठ साधक ।। 3 ।।
जन्मदिन पर पुष्प अर्पित...

# प्रयागराज कुम्भ में जनजाति समागम

कुम्भ स्नान और कुम्भ ध्यान से, जागृत होती आत्म चेतना।
गंगा के गंगत्व-भाव से, हो जागृत हिन्दुत्व-चेतना।।

If Undelivered Please Return To :

**Purvanchal Kalyan Ashram**

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post